- पौधे के इन सूखे भागों को साफ पॉलिथिन बैगों में पैक कर नमीरहित स्थान पर भंडारण हेतु रखा जाना चाहिए।

**पैदावार :**

- एक पेड़ में लगभग 500–850 ग्राम की पैदावार होती है। इस तरह, एक हेक्टेयर में 1250 किलोग्राम जड़ की पैदावार हो जाती है।

# अग्निमंथ की खेती

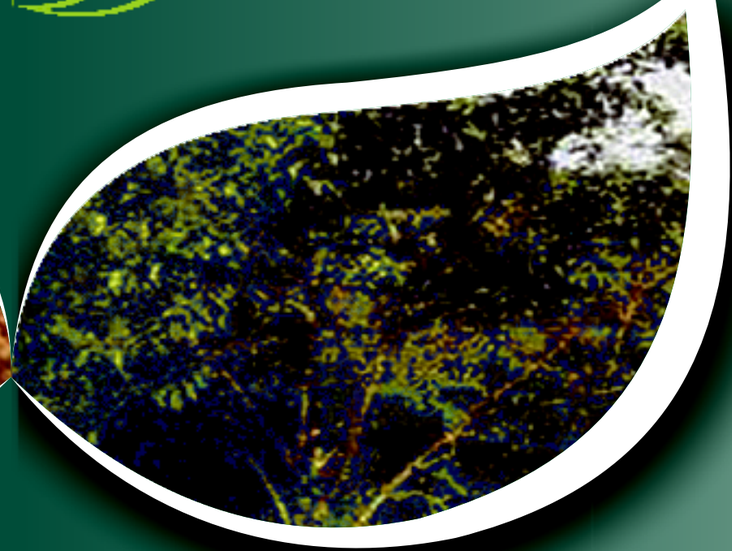


## राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष: 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वैबसाईट : www.nmpb.nic.in



*नोट – कृषि प्राद्योगिकी का विकास क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, भुवनेश्वर–751013, उड़ीसा द्वारा किया गया है।*


| | | |
|---|---|---|
| सामान्य नाम | : | अग्निमंथ |
| वानस्पतिक नाम | : | प्रेमना इन्टेगरीफोलिया |
| कुल | : | वरबेनीऐसी |
| उपयोगी भाग | : | जड़, जड़ व तने की छाल और पत्ते |
| सामान्य उपयोग | : | अग्निमथ की जड़ अग्नि शामक, पेट के विकारों में प्रयुक्त होने वाली तथा ज्वर नाशक है। यह लीवर की खराबी, सर्दी, बुखार, गैस, हड्डियों व जोड़ों के दर्द को दूर करने में भी उपयोगी है। |


## राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

# अग्निमंथ

प्रेमना इन्टेगरीफोलिया

कुल–वरबेनीऐसी

अग्निमंथ एक लम्बी झाड़ी होती है जिसमें छोटे–छोटे कांटे होते हैं।

**जलवायु व मिट्टी :**

- यह पौधा अधिकतर रेतीली चिकनी किस्म की भूमि में गर्म व आर्द्र जलवायु में उगता है।

**रोपण सामग्री :**

- इस पौधे को उपजाने के लिए एक साल के वर्ष के पौधे की कलम प्रजनक सामग्री के रूप में प्रयोग में लायी जाती हैं। इन कलमों को फसल पकने पर पेड़ों से फरवरी–मार्च माह में ही एकत्र कर लिया जाता है।

## नर्सरी तकनीक

**पौध तैयार करना :**

- कलम पौधे उगाने के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं।
- कलम को पॉलिथिन के थैलों, रेत, मिट्टी और उर्वरक के मिश्रण में लगाया जाता है। कलम के स्थान पर अंकुरित जड़ों को भी लगाया जा सकता है।
- कलमों को छायादार या ऐसे चैम्बरों में लगाया जा सकता है जहां धूप सीधे न पड़ती हो। जड़ें निकलने (अंकुरण) के बाद उन्हें पॉली बैगों में लगाया जाता है।

## पौध रोपण

**भूमि तैयार करना और उर्वरक का प्रयोग :**

- जमीन को अच्छी तरह जोत कर नम किया जाता है।
- 45x45x45 सेमी. के गड्ढे बनाए जाते हैं। इन गड्ढों में 1:1:1 के अनुपात में रेत, मिट्टी व उर्वरक मिलाकर भरी जाती है।

**पौध दर :**

- एक हेक्टेयर जमीन में लगभग 80 हजार अंकुरित कलम लगाए जाने चाहिए।

**अंतर फसल प्रणाली :**

- हालांकि, आमतौर पर यह फसल अकेले ही उगाई जाती है लेकिन तटीय क्षेत्रों में इसके बीच प्याज, लहसुन, आदि सब्जियां भी उगाई जा सकती हैं।

**संवर्धन विधियां :**

- फसल के दौरान, बीच–बीच में जब जरूरी हो, हाथ से गुड़ाई कर खरपतवार निकालने और मिट्टी को नरम किया जाना चाहिए।
- फसल लगाने के पहले छह महीने में तीन बार गुड़ाई कर खरपतवार निकालना जरूरी है।

**सिंचाई :**

- शुष्क मौसम में 15–20 दिनों के अन्तराल में, विशेषकर प्रथम वर्ष में दिसम्बर से मई के बीच सिंचाई करना आवश्यक है।

## फसल का प्रबंधन

**फसल का पकना और उसकी कटाई :**

- पौधा खेत में कम–से–कम 3 वर्ष तक रहना चाहिए।
- बरसात के मौसम के बाद सितम्बर–अक्टूबर में फसल की कटाई की जानी चाहिए।

**फसल कटाई के बाद का प्रबंधन :**

- पौधे निकालने के लिए उन्हें ठीक से खोदा जाना चाहिए ताकी जड़ों को कोई नुकसान न हो।
- जड़ों को अलग–अलग करके उनकी छाल उतारी जाती है। छाल व जड़ दोनों को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर छाया में सुखाया जाता है।